

# ये 'हृदय परिवर्तन' का दौर है



देश को आहिस्ता-आहिस्ता 'लॉक डाउन' से बाहर निकालने की तैयारियां चल रही हैं। इसके लिए शहरों को संक्रमण-प्रभावित और संक्रमण-मुक्त इलाकों के अलग-अलग झोन्स में बांटा जाएगा। अब नागरिकों के सामने भी चुनौती आन पड़ी है कि वे भी अपने एक-तरफ़ा चल रहे सोच को अलग-अलग झोन्स में बांटना शुरू करें। बंद घरों और बंद दिमाग के कारण अभी केवल दो ही चीजें हो पा रही हैं: या तो टी वी की खबरों के ज़रिए मरने वालों के आँकड़े पता चल रहे हैं, या फिर एंकरों के साथ-साथ दर्शक भी संक्रमण फैलाने वालों को देश भर में ढूंढने में जुट गए हैं। दूसरे यह कि कोरोना महामारी ने अखबारों का वज़न भी काफ़ी कम कर दिया है। पाठकों को पता ही नहीं चल पा रहा है कि ज्यादातर अखबार उनकी वैचारिक नसबंदी करने में जुटे हुए हैं। वे या तो कोरोना से बचने के घरेलू नुस्खे छाप रहे हैं या फिर पाठकों को निराशा से उबारने के लिए मोटिवेशनल ज्ञान अथवा मनोरंजन के फ़िल्मी समाचार बाँट रहे हैं। बचने के नुस्खे भी ठीक वैसे ही हैं जैसे कि गर्भवती महिलाओं को उनकी सास 'डूज़ एंड डॉट्स' गिनाती रहती हैं।

हमें अपने मस्तिष्क के ग्रीन झोन को सक्रिय करके सोचना शुरू कर देना चाहिए कि क्या हमारे प्रधानमंत्री इन दिनों कुछ अलग-अलग नहीं नज़र आ रहे हैं? वे इन दिनों जब भी जनता से बात करते हैं, काफ़ी विनम्र और भावुक दिखाई पड़ते हैं! चाहें तो मंगलवार सुबह दस बजे इसे नोटिस कर सकते हैं। वे 'मैं' शब्द के बजाय 'हम' या 'हमें' का ज्यादा इस्तेमाल करने लगे हैं! मसलन 'इस संकट का हम सबको मिलकर मुकाबला करना है', आदि, आदि। वे ग़ैर-भाजपा मुख्यमंत्रियों के सुझावों पर ज्यादा गम्भीरता से ध्यान दे रहे हैं! इस समय समूचे परिदृश्य से 'इन ग़दरों को००००' वाली 'जमात' पूरी तरह से अनुपस्थित है! मुमकिन है क.मिश्रा भी राहत के कामों में जुटे हों। हमें गौर करना चाहिए कि कहीं से भी कोई विवादास्पद बयान नहीं आ रहा है जबकि इसके सारे एक्स्पर्ट्स इस समय काफ़ी ज्यादा फुर्सत में हैं।

बहुत कम लोगों ने ध्यान दिया होगा कि संघ के कार्यकर्ता भी इस समय बिना किसी आलोचना की परवाह किए कई स्थानों पर अपनी परम्परागत पोषाख में लॉक डाउन का पालन करवाने में स्थानीय प्रशासनों की मदद कर रहे हैं। भाजपा के देश में 18 करोड़ सदस्य हैं यानी प्रत्येक सात नागरिकों में एक भाजपा का सदस्य है। संघ में वैसे तो कोई औपचारिक सदस्यता का कॉलम नहीं है फिर भी सभी अनुशांगिक संगठनों को भी मिला लें तो उसके एक से दो करोड़ लोग हैं, यह संख्या भाजपा से अलग है। यानी देश के प्रत्येक सौ नागरिकों में एक। इतने लोगों की टीम अगर कोरोना के बचाव में जुट जाए तो क्रांति हो सकती है।

सोचना शुरू करने का वक्त आ गया है कि महामारी से जूझने के दौरान चारों ओर हृदय-परिवर्तन की जो लहर दिखाई दे रही है वह स्थाई होने जा रही है या फिर सबकुछ वैसा ही है जैसे घरों में किसी बुजुर्ग की गम्भीर बीमारी के चलते 'परिवार' के सारे सदस्य प्रॉपर्टी के बंटवारे की बातें बंद करके पलंग के पास जमा हो जाते हैं और फिर अंत्येष्टि के तुरंत बाद और उठवाने के पहले ही पूर्ववत हो जाते हैं ?

सोचने का समय आ गया है कि इस समय भारतीय गणराज्य का जो संघीय स्वरूप (फ़ेडरल स्ट्रक्चर ही पढ़ें) अपने श्रेष्ठतम अवतार में अभिव्यक्त हो रहा है वह आगे भी कायम रहने वाला है या फिर कोरोना की महामारी के इलाज में चुनावों के वैक्सीन ही/भी ईजाद किए जा रहे हैं ? अगर कहा जा रहा है कि कोरोना संकट के बाद जिंदगी बदल जाएगी और सबकुछ पहले जैसा नहीं रहेगा तो हमें इस बात पर चिंता के साथ ही खुश होना चाहिए। दिमाग लगाना शुरू कर देना चाहिए कि किन-किन परिवर्तनों के लिए हमें तैयार रहने को कहा जा सकता है।

(लेखक कई समाचार पत्रों में संपादक रह चुके हैं व राजनतिक विश्लेषक हैं)